पूर्व – मध्यकालीन काव्य में चित्रित स्त्री–जीवन

डॉ॰ ललिता मीणा,
असिसटेंट प्रोफेसर,
माता सुन्दरी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

मध्यकालीन काव्य की स्त्रियां अपने पतिव्रतप पालन में अदभुत दृढ़ता एवं उत्साह के साथ दिखाई देती है। वे अपने मान–सम्मान एवं सतीत्व की रक्षा के लिए अपने जीवन को त्यागने में तनिक भी संकोच नहीं करती। इस काल में स्त्री के व्यवहार में अपनी नियति से समझौते का भाव नजर आता है। किन्तु चरित्र की कीमत पर वह कभी भी समझौता करती दिखाई नहीं देती। अतः प्रस्तुत समाज में स्त्री पुरूष के अधीन ही दिखाई देती है। अपने सभी अधिकारों से वंचित रहने के बावजूद वह समाज द्वारा नियत नियमों का पालन करती दिखाई देती है। इस संदर्भ में डॉ० नगेन्द्र लिखते हैं "सामान्य जन के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नही थी। साम्प्रदायिक तनाव बढ़ने के कारण साहित्य और शास्त्र का ज्ञान सामान्य जाति की नारियों व पुरूषों के लिए अप्राप्य बना दिया गया था। सती प्रथा भी इस समय के समाज का भयंकर अभिशाप थी। फलतः सामान्य जाति की नारी के लिए पुरूष का जीवन और मृत्यु दोनों ही भयंकर घटना बन जाते थे।

शब्द संकेत – *रागात्मक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पुरूष प्रधान समाज, साम्राज्यवादी, सामन्तवादी, कुत्सित वासना, उदात्त मूल्य, राजनैतिक संधियां, अभिजात वर्ग, गणिका, धरोहर, निवृति मार्ग, आक्षरिक ज्ञान, दृष्टिकोण, आख्यान, उत्तरदायित्व, निन्दनीय, नैतिक, आदर्श, स्वच्छंद आचरण।*

प्रस्तावना:

किसी समाज का अध्ययन उसमें नारी की स्थिति के विश्लेषण के बिना अधूरा ही रहता है। नारी और पुरूष का संबंध तत्कालीन समाज की रागात्मक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधि को प्रकट करता हैं। पुरूष प्रधान समाज में नारी का इतिहास उस समाज के उत्थान एवं पतन का इतिहास होता है।

विकास के प्रारंभिक दौर में स्त्री–प्रधन समाज विकसित हुआ। आर्यो के आगमन से पूर्व आर्योतर जातियों के समाज का संघटन स्त्री प्रधान था, किन्तु आर्यों के आगमन के साथ ही समाज के संघटन का स्वरूप पुरूष प्रधान में परिवर्तित होने लगा। इसी के साथ साम्राज्यवादी और सामन्तवादी सामाजिक शक्ति सामने आने लगी। पुरूष प्रधान समाज जैसे–जैसे परिपक्वता की ओर बढ़ता गया, नारी की सामाजिक स्थिति कमजोर होती चली गई। डॉ॰ नगेन्द्र आदिकाल में स्त्रियों की दशा के बारे में लिखते है "नारी भी भोग्य–मात्र रह गयी थी। वह क्रय–विक्रय एवं अपहरण की वस्तु बनती जा रही थी। [1] वह उपहार की वस्तु, विजयोपहार, दासी आदि अनेक रूप स्वीकार करती चली गई। जो नारी कभी स्वच्छन्द हुआ करती थी और विवाह संबंध का चयन उसकी अपनी रूचि के अनुसार होता था, वह पुरूष द्वारा बनाये गए विभिन्न बंधनों में

जकड़ती चली गई। उसके अधिकारों के प्रति पुरूष ज्यादा अनुदार, उसकी स्वतंत्रता के प्रति शक्ति और कर्तव्यों के प्रति निष्ठुर होता गया।

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थावेर पुत्राः न स्त्री स्वतंत्राय मर्हसि।।

मनु स्मृति 9/3

स्त्री के लिए शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग भी बन्द कर दिया गया।[2] जीवन के उच्च कहे जाने वाले आचारों में भी इसका स्थान छीन लिया गया।

राजपूत युग में नारी के कामिनी या विलासिनी रूप की ही झांकी मिलती है। नारी एक अचल सम्पति के रूप में नजर आने लगी। नारी का अपहरण उसी प्रकार किया जाता था जिस प्रकार राज्य का। मुसलमानों के आगमन पर नारी के सौंदर्य के आधार पर युद्ध भी किये गए। (उदयपुर की पद्मिनी को लेकर अल्लाउद्दीन ने चितौड़ पर आक्रमण किया था।)[3] इस तरह विलास, भोग और पुरूष की कुत्सित वासना के कीचड़ में नारी का जीवन उदात्त मूल्यों से वंचित हो गया। राजनैतिक संधियां और सम्बन्ध भी नारी के आधार पर होने लगे। राजपूतानी से अकबर का विवाह एक राजनैतिक संबंध को स्थापित करने का माध्यम था।

मध्यकालीन काव्यों में उस युग की नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति तो मिली ही, साथ में विविध सामाजिक सन्दर्भो में नारी जीवन का वस्तुनिष्ठ वर्णन भी मिलता है। इस युग का कुछ साहित्य आख्यानों पर आधरित है। जिसके कारण इनके प्रमुख चरित्रों का स्वरूप परम्परा से प्राप्त हुआ है। परम्परा से ग्रस्त होने के बावजूद ये चरित्र अपनी अलग पहचान रखते हैं। चरित्रों के निर्माण में कवियों की कल्पना और रूचि ही प्रमुख है। इसीलिए इन चरित्रों में कवियों के युग की नारी के चरित्र का विशेष या सामान्य रूप ही उजागर हुआ है। कह सकते है कि इस युग के कवियों ने अपने युग एवं परम्परा से प्राप्त नारी रूप को अपनी कल्पना के बल पर आदर्श बनाने की चेष्टा की है।

"पावक प्रबल देखि वैदेही। हृदय हरष नहिं भय कछु तेही" [4.]

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।[5]

मध्यकालीन कवियों ने विशेष उद्देश्य से काव्य की रचना की। इनका काव्य रचना का उद्देश्य मात्र कला की सृष्टि करना नहीं था अपितु वे अपने जीवन दर्शन को भी अभिव्यक्त करते है। नारी चरित्र का निर्माण उनके जीवन दर्शन का ही अंग है। उसी कारण एक कवि द्वारा रचित नारी चरित्र की रूप रेखा अन्य कवियों द्वारा रचित नारी चरित्र की रूप रेखा से बिल्कुल भिन्न नजर आती है।

मध्यकालीन साहित्य में विभिन्न सामाजिक वर्गो की स्त्रियों की चर्चा मिलती है। इनमें अभिजात वर्ग की स्त्रियों का चित्रण अधिक मिलता है। जैसे नागमती, पद्मावती,6 मैना, सीता, कौशल्या सुमित्रा, कैकयी, सुनयना। ये सभी राजपरिवारों की स्त्रियां हैं। इनकी सेवा के लिए दासियां हुआ करती हैं। पद्मावती, नागमती, सीता के संदर्भ में दासियों की चर्चा हुई है।

किन्तु फिर भी ये स्त्रियां अपने घर के कुछ कार्य स्वयं ही करती है। अल्लाउद्दीन को दिए जाने वाले भोज के अवसर पर पद्मावती के रसोई पकाने का वर्णन मिलता है। सीता स्वयं अपने हाथों से अपने घर के दैनिक कार्य करती है। जबकि उनके पास अनेक सेवक सेविकाएँ होती है। इसी प्रकार अन्य रानियां भी सहज ही साधारण स्त्रियों के रूप में चित्रित दिखाई दी है।

यशोदा, कीर्ति, राधा, रोहिणी रानी नहीं थी किन्तु वे अभिजात वर्ग की स्त्रियां है। यशोदा कीर्ति और रोहिणी, गृहकार्य एवं सन्तानों का लालन पालन करती है। गोपियों का एक समुदाय अपनी जीविका चलाने के लिए परिश्रम करता है। दूध दोहना, मक्खन निकालना एवं दूध दही बेचने

का उल्लेख मध्यकालीन काव्य में मिलता है।

सामान्य गोपियों की भांति अभिजातेतर वर्ग की स्त्रियां भी जीविका के लिए श्रम करती है। कबीर ने इस प्रकार की स्त्रियों में से कलबारिन्द, दासी, पनिहारिन, मालिन की चर्चा की है। जायसी ने योगिन पनिहारिन, मालिन, धाय, दासी और नर्तकी का उल्लेख किया है। सूर ने दाई, नाइन, सुनारिन, गांधिन, घोबिन, दरजिन एवं रंगरेजिन का उल्लेख किया है। तुलसी ने अहीरिन, दरजिन, तखोलिन मोचिन, मालिन, नारिन, नाउन और दासी की चर्चा की है। ये सभी स्त्रियां अपनी जाति के परम्परागत कार्य करती हैं। अतः ये श्रम जीवी वर्ग की स्त्रियां हैं।

मध्यकालीन कवियों ने वैश्या का भी उल्लेख किया है। जिसका कार्य निन्दनीय माना जाता है। पतिव्रता स्त्री के विलोम में कबीर ने वैश्या का उल्लेख किया है। सूर ने गणिका को दुष्ट, पुश्चली एवं अधम कहा है। तुलसी तो गणिका पुत्र को भी निन्दा का पात्र मानते है। जायसी की कुमुदिनी को पर पुरूष की दूती होने के कारण पद्मावती उसे वैश्या कहकर फटकारती है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज में अनैतिक यौन संबंध कराने वाली दूती या करने वाली वैश्या के प्रति समाज का निन्दापरक दृष्टिकोण रहा।

परिवार के सदस्य के रूप में साधारणतः स्त्री के तीन ही रूप प्रमुख हैं – कन्या, पत्नी और माता। कन्या पिता के लिए उतरदायित्व बनकर आती है। कन्या के आचरण के साथ माता पिता का सामाजिक सम्मान अथवा अपमान जुड़ा होता है। इसी के चलते जब राधा को कृष्ण से प्रेम होता है तो राधा की मां कन्या को कुल का दुःख बताती है। मध्यकालीन काव्य में पद्मावती, राधा, पार्वती, सीता आदि सभी कन्याएं अपने–अपने माता–पिता से पूरा स्नेह एवं सद्भाव प्राप्त करती है।

मध्यकालीन काव्य में स्त्री पत्नी रूप में अपने पति की इच्छा पर निर्भर रहती है। स्त्री की आर्थिक स्थिति का तत्कालीन कवियों ने उल्लेख करने में संकोच किया है। पत्नी रूप में स्त्री पति की सम्पति और ऐश्वर्य का पति के साथ उपभोग करती है। सूर, तुलसी, जायसी जैसे मध्यकालीन कवियों की स्त्रियां विभिन्न आभूषण धारण करती नजर आती है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पत्नी रूप वाली स्त्रियों की धरोहर उनके आभूषण ही होंगे।

स्त्री के सतीत्व एवं सम्मान की रक्षा करना पुरूष का नैतिक कर्तव्य है। स्त्री के पति के साथ–साथ समाज का भी यह नैतिक कर्तव्य है। स्त्री के सतीत्व की रक्षा करते हुए आत्म बलिदान करना भी एक गौरवपूर्ण कार्य है। रत्नसेन से जब अल्लाउद्दीन पद्मावती की मांग करता है तो रत्नसेन प्राणों की बाजी लगाकर पद्मावती के सम्मान की रक्षा के लिए तत्पर रहता है। गोरा बादल भी स्त्री सम्मान की रक्षा के खातिर अल्लाउद्दीन का सामना करते हैं। सीता के सम्मान के लिए जटायु अपने प्राणों को न्यौछावर कर देता है। अतः इस प्रकार तत्कालीन साहित्य मे ंनारी के सम्मान की रक्षा करने का नैतिक आदर्श प्रस्तुत हुआ है।

शत्रु से बदला लेने के लिए स्त्री के कष्ट और अपहरण को साधन बनाया गया है। देवपाल इसी उद्देश्य के लिए पद्मावती के पास अपनी दूती भेजता है। खर और दूषण शूर्पणखा के अपमान का बदला लेने क लिए राम से सीता की मांग करते है। इस प्रकार का आचरण सभ्य समाज के लिए उचित नहीं है।

स्त्री के नैतिक चरित्र के प्रति समाज का व्यवहार कठोर नजर आता हैं पद्मावती को बारह वर्ष की अवस्था पर पहुंचते पहुंचते उसे पुरूषों के सम्पर्क से अलग जगह पर रखा जाता है।[7] राधा एवं गोपियों को कृष्ण से प्रेम के कारण परिवार के लोगों द्वारा निन्दा मिलती है। राधा की मां को तो लोकापवाद का सामना करना पड़ता है। दूसरी

और यशोदा कृष्ण के स्वच्छन्द आचरण के कारण विशेष चिन्तित नज़र नहीं आती। इस प्रकार स्त्री एवं पुरूष के नैतिक मानकों में अन्तर दिखाई देता है। स्त्री के लिए नैतिक आचरण के निश्चित नियम निर्धारित है। जैसे स्त्री को पति के प्रति एक निष्ठ एवं सेवा भाव रखना चाहिए। सूर और तुलसी के साहित्य में पतिवृत्य स्त्री के धर्म के रूप में प्रतिष्ठित है। इनके अनुसार स्त्री का चरित्र शृंखलन होना समाज के साथ–साथ धर्म की दृष्टि में भी गंभीर अपराध है।

स्त्री का महत्व उसके पतिव्रत्य के आधार पर माना गया है कबीर के अनुसार जो स्त्री पति के अनुसार आचरण करे वही वास्तव में स्त्री है। जायसी भी उसी स्त्री की सराहना करते है जो पति के विरह की अग्नि को सह रही हो। जो स्त्री अपने पति के मरने के साथ उसकी चिता में जलकर सती होती है उसके प्रति सूर, तुलसी, जायसी, और कबीर के काव्य में गंभीर आशंका नज़र आती है।

"सर रचि दान पुन्ति बहु कीन्हा। सात बार फिरि भंवरि दीन्हा।

एक भवरि में जो रे बिहाही। अब दोसरि दै गोहन जाहि।।"[8]

मध्यकालीन काव्य की स्त्रियां अपने पतिव्रत्य पालन में अद्भुत दृढ़ता एवं उत्साह के साथ दिखाई देती है। सीता रावण के विभिन्न प्रलोभनो एवं त्रास के सामने अद्वितीय चारित्रिक दृढ़ता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। वहीं पद्मावती दूती के प्रलोभनों के सामने अपने पातिव्रत्य को दृढ़ रखती है।

मध्यकालीन साहित्य निवृत्ति भावना प्रधान है। स्त्री को निवृति मार्ग में बाधा बताया है। इसीलिए कबीर, सूर और तुलसी ने स्त्री से दूर रहना ही उचित बताया है। स्त्री को त्याज्य बताकर कामवासना का त्याग करना इन कवियों का उद्देश्य रहा। जायसी स्त्री को त्यागने की बात नहीं कहते हैं।

स्त्री के अधिकारों का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है। रत्नसेन के द्वारा नागमती, शंकर के द्वारा सती और राम के द्वारा सीता के त्याग के अवसर पर ये स्त्रियां अपने आपको विवश एवं असहाय अनुभव करती है। इस प्रकार स्त्री को किसी प्रकार का सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं है।

मध्यकाल में स्त्री के व्यवहार में अपनी नियति से समझौते का भाव नजर आता है। किन्तु चरित्र की कीमत पर वह कभी भी समझौता करती दिखाई नही देती। वाल्मीकि की सीता जब परिस्थितियों को अपने अनुकूल एवं सहज नहीं पाती, तो वह कभी कभी विरोध करती हुई दिखाई देती है। दूसरी और तुलसी की सीता हर परिस्थिति में कष्टों का सामना करती है। मन्दोदरी भी रावण के क्रूर व्यवहार के सामने मौन नजर आती है। नागमती भी सुग्गा प्रसंग में रत्नसेन की क्रूर फटकार सुनकर विवश्ता को अनुभव करती है।

मध्यकालीन युग में नारी को अपना सम्पूर्ण जीवन घर में ही व्यतीत करना होता है। उसके बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण करने का उल्लेख कही भी नहीं मिलता है। किन्तु थोड़ा बहुत शिक्षा का अवसर स्त्रियों को मिला रहा होगा, क्योंकि पद्मावती का विधिवता अध्ययन करने का उल्लेख मिलता है। सीता भी जब अशोक वाटिका का में होती है तो वहां पर राम नाम अंकित मुद्रा से ही हनुमान को राम भक्त के रूप में पहचानती है। रूक्मिणी भी कृष्ण को पत्र लिखती हुई नज़र आती है। अतः कह सकते है कि उस युग में स्त्री को ज्यादा नहीं तो थोड़ा बहुत आक्षरिक ज्ञान रहा होगा। व्यवहारिक शिक्षा परिवार के गुरूजनों से मिलती रही है। सीता जब ससुराल के लिए विदा होती तो उसकी सखियां उसे व्यवहारिक ज्ञान देती नजर आती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ० नगेन्द्र, प्रथम संस्करण 1973, पृष्ठ – 56
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ० नगेन्द्र, प्रथम संस्करण 1973, पृष्ठ–56
3. जायसी ग्रन्थावली, सटीक, आ. रामचन्द्र शुक्ल, नमन प्रकाशन, पृष्ठ–488
4. रामचरित मानस, लंका काण्ड 109/6
5. रामचरित मानस, – बालकाण्ड 188
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र, पृष्ठ – 165
7. भक्तिकालीन काव्य में चित्रित नारी जीवन – डॉ प्यारे लाल शुक्ल, पृष्ठ –327
8. 8 जायसी ग्रंथावली, सटीक आ रामचन्द्र शुक्ल, नमन प्रकाशन, पृष्ठ – 650

सहायक ग्रंथ

1. रीतिकालीन काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि – डॉ. वै. वेंकट रमण राव
2. भक्तिकालीन काव्य में चित्रित नारी जीवन – डॉ प्यारे लाल शुक्ल